International Interdisciplinary Conference on
Recent Research in Arts, Culture,
Literature, Languages, Philosophy,
Spirituality and Education

महाकवि भवभूति की कृतियों में पर्यावरण संचेतना

सौरभ आर्य
दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रकृति प्रेम ही पर्यावरण संरक्षण का मूल है। देखा जाए तो पर्यावरण संचेतना की भावना प्रत्येक काल में विद्यमान थी। संस्कृत के सभी कवि अपनी काव्य रचनाओं में सूर्य, चन्द्रमा, प्रातःकाल, सन्ध्या, रात्रि, पर्वत, वन, मेघ एव नदी आदि का यथास्थान वर्णन करते हैं। संस्कृतसाहित्य के समान पर्यावरण चिन्तन का कोई अन्य प्राचीन साहित्य इस समय उपलब्ध नहीं होता। पर्यावरण का व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ है– **परितः आव्रियते आच्छाद्यते येन तत् पर्यावरणम्।** संस्कृतसाहित्य में महाकवि भवभूति का पर्यावरण के प्रति उच्चकोटि का चिन्तन दिखाई देता है। महाकवि भवभूति की तीन नाट्यकृतियाँ उपलब्ध हैं– उत्तररामचरितम्, महावीरचरितम् और मालतीमाधवम्। इन तीनों नाटकों में महाकवि भवभूति ने अनेक स्थलों पर प्राकृतिक तत्त्वों के माध्यम से अपनी कृतियों को सुसज्जित किया है। जिसे देखकर भवभूति के प्रकृति प्रेम की समुत्कृष्टता का दर्शन होता है। अब इस पक्ष में कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं।

उत्तररामचरित के द्वितीय अंक में सुरभित शीतलजल से युक्त नदियों का सौन्दर्यपूर्ण वर्णन द्रष्टव्य है–

इहसमदशकुन्ताक्रान्तवानीरमुक्तप्रसवसुरभिशीतस्वच्छतोया वहन्ति।
फलभरपरिणामश्यामजम्बूनिकुंजस्खलनमुखभूरिस्त्रोतसोनिर्झरिण्यः।। 1

अर्थात् यहाँ मदमत्त पक्षियों से युक्त, वेतस लताओं से गिरे फूलों से सुगन्धित, शीतल और स्वच्छ जल वाली नदियाँ बह रही हैं तथा जिसके अनेक प्रवाह फलों के पकने से गिरने से काले जामुन के कुंजों में टकराने से शब्दायमान हो रहे हैं।

महाकवि भवभूति ने पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि में प्राकृतिक तत्त्वों का चयन पूरे कौशल के साथ किया है। संस्कृत नाट्य जगत् में महाकवि भवभूति की पर्यावरण परक दृष्टि अनुपम और अत्युत्तम है। महावीरचरित में वर्षा ऋतु का मनोहर वर्णन भी दर्शनीय है–

स्थितमुपनतजृम्भारम्भबिम्बैः कदम्बैः
कृतमतिकलकण्ठैस्ताण्डवनीलकण्ठैः।
अपि च विघटमानप्रौढतापिच्छनीलः
श्रयतिशिखरमद्रेर्नूतनस्तोयवाहः।। 2

यहाँ भवभूति वर्णन करते हैं कि कदम्ब विकासोन्मुख हो रहे हैं, मधुर स्वरवाले नीलकण्ठ नाच रहे हैं, विकसित तथा प्रौढ तमाल वृक्ष की तरह श्यामवर्ण नया मेघ पर्वत की चोटियों पर आ रहे हैं।

संस्कृत साहित्य का प्रकृति चित्रण ही वस्तुतः पर्यावरण संचेतना ही है। पर्यावरण के सर्वांगीण अध्ययन के लिए प्राकृतिक तत्वों का पूर्ण ज्ञान आवश्यक है। महाकवि भवभूति अपने नाटक मालतीमाधव के अन्तर्गत प्राकृतिक तत्वों में वायु, जल, मेघ, मयूर तथा वृक्षों का बहुत सुन्दर वर्णन करते हुए कहते हैं कि –

भ्रमय जलदानम्भोगर्भान्प्रमोदय चातकान्–
न्कलय शिखिनः केकोत्कण्ठान्कठोरय केतकान्। 3

अर्थात् आप जलपूर्ण मेघों को चलाते रहिए, चातकों को प्रसन्न कीजिए, केका शब्द करने में उत्कण्ठित मयूरों को नचाइए और केतकी वृक्षों को पुष्ट बनाइए।

मालतीमाधव में ही कवि वन प्रदेश का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि –

वानीरप्रसवैर्निकुंजसरितामासक्तवासं पयः
पर्यन्तेषुचयूथिकासुमनसामुज्जृम्भितं जालकैः।
उन्मीलत्कुटजप्रहासिषु गिरेरालम्ब्य सानूनितः
प्राग्भागेषु शिखण्डिताण्डवविधौ मेघैर्वितानाय्यते।। 4

अर्थात् लतागृह के निकटवर्ती नदियों का जल वेतस के पुष्पों से सौरभ युक्त हो रहा है। नदीतट में जूही के फूलों की नयी कलियाँ विकसित हो गई हैं। खिले हुए कुटज पुष्पों से शोभासम्पन्न पर्वत के शिखरों पर जहाँ समतल प्रदेश हैं, मयूरों के ताण्डव विधान में उनका आश्रय लेकर मेघ वितान का आचरण कर रहे हैं।

कवि के लिए प्रकृति के जितने भी रूप हैं वे सभी वर्णन के योग्य होते हैं। चाहे वे सुन्दर हो चाहे असुन्दर। कवि की जिस प्रकार की रुचि उद्यान तडागादि में होती हैं वैसी ही रुचि गम्भीर भयावह वनों के वर्णन में भी होनी चाहिए। जब हम महाकवि भवभूति को इस दृष्टि से देखते हैं तो भवभूति वस्तुतः उच्च रुचि के दिखाई पड़ते हैं। इसका साक्षात् उदाहरण हमें उत्तररामचरित के अन्तर्गत दण्डक वन के वर्णन के माध्यम से देखने को मिलता है –

निष्कूजस्तिमिता : क्वचित् क्वचिदपि प्रोच्चण्डसत्त्वस्वनाः
स्वेच्छासुप्तगभीरभोगभुजगश्वासप्रदीप्ताग्नयः।
सीमानः प्रदरोदरेषु विरल स्वल्पाम्भसो या स्वयं
तृष्यद्भिः प्रति सूर्यकैरजगरस्वेदद्रवः पीयते।। 5

अर्थात् ये सीमा प्रदेश कहीं तो पक्षियों के कूजन से सर्वथा रहित और निश्चल, कहीं श्वापदों के अति भयानक शब्दों वाली, अपनी इच्छानुसार सोए हुए बड़े तथा भयानक सर्पों के श्वासों से प्रदीप्त अग्नियों वाली, बिलों के मध्यभागों में विद्यमान थोड़े जल वाली भूमि है, जिसमें प्यासे गिरगिट अजगरों के पसीने की बूँदे पी रहे हैं।

उत्तरामचरित में ही भवभूति तपोवन का सुन्दर वर्णन करते हुए कहते हैं कि जहाँ पर्वत स्त्रोतों के तटों पर रहते हुए वानप्रस्थी अतिथि सत्कार को ही अपना कर्तव्य मानते थे। केवल मुठ्ठी भर अन्न से अपना जीवन निर्वाह करते थे। इस प्रकार वे संयमी अहिंसा धर्म का पालन करते हुए अपनी पर्णशालाओं में आनन्दपूर्वक निवास करते थे –

एतानि तानि गिरिनिर्झरिणी तटेषु वैखानासाश्रिततरुणि तपोवनानि।
येष्वातिथेय परमा यमिनो भजन्ते नीवारमुष्टिपचना गृहिणो गृहाणि।। 6

इस प्रकार महाकवि भवभूति ने अपनी नाट्यकृतियों में भयानक वनों, सुन्दर उपवनों तथा तपोवनों का चारुतर वर्णन करके पर्यावरण के प्रति अपार प्रेम प्रकट किया है।

नाटकों में प्रकृति वर्णन के लिए अवकाश कम होता है पुनरपि भवभूति ने प्रकृति वर्णन में विषयों का चयन अति कौशल के साथ किया है और उनकों अपनी रचनाओं में पूर्णतया वर्णित किया है।

भवभूति को पर्वत श्रेणी वर्णन भी अधिक अभीष्ट था। उन्होंने अपने नाटकों में अनेक स्थलों पर पर्वतों का मनोहर वर्णन किया है। उदाहरणार्थ हम देख सकते हैं –

कूजत्कुंजकुटीर कौशिक घटाघूत्कारवत्कीचक–
स्तम्बाम्बरमूक मौकुलिकुलः क्रौंचाभिधःअयं गिरिः।
एतस्मिन्प्रचलाकिनां प्रचलतामुद्वेजिताः कूजितैः
रूद्देलन्ति पुराणरोहिणतरुस्कन्धेषु कुम्भीनसाः।। 7

अर्थात् यह क्रौंच नाम का पर्वत है, जहाँ पर कीचकों के झुण्डों से उल्लूओं के घू–घू शब्द से युक्त बाँसों की तीव्र ध्वनि से कौओं का समूह चुप हो गया है। इस पर्वत पर भ्रमण करते हुए मोरों के कूजन से भयभीत सर्प पुराने चन्दन के वृक्षों से लिपट रहे हैं।

ISBN: 978-93-85822-91-9

महावीरचरित में कवि द्वारा प्राकृतिक तत्वों का मनोहर दृश्य भी सभी को अपनी ओर आकर्षित करता है जहाँ लक्ष्मण राम को कहते हैं–

गर्जाजर्जरितासु दिक्षु बधिरे तत्स्फूर्जथुस्फूर्जिते–
व्योम्नि भ्राम्यति दुष्प्रभंजनजवादभ्रे अप्यदभ्रे मुहुः।
आक्षिष्यान्धयति द्रुमान्धतमसे चक्षुः प्रविश्य क्षपा
यत्रासीतक्षपिता क्षरज्जलधरे त्वक्सारलक्षीकृते।। 8

अर्थात् मेघ के शब्द से जब दिशायें फट रही थी, बिजली की कड़क से आकाश विदीर्ण हो रहा था, वायु के झोंकों के साथ बादल इधर–उधर घूम रहे थे, पेड़ों की छाया लोगों की दृष्टि को अन्धी बना रही थी, ऐसे समय में वर्षा होते रहने पर बांस की झुरमुटवाली जिस कन्दरा में हम लोगों ने रात बिताई थी।

इस प्रकार महाकवि भवभूति प्राकृतिक तत्वों के माध्यम से पर्यावरण संचेतना के विविध उदाहरण हमारे समक्ष प्रस्तुत करते हैं। इस संसार में प्राकृतिक शक्तियाँ ही सभी को अन्न, जल, वायु आदि पदार्थ प्रदान करती हैं। यदि ये शक्तियाँ मनुष्यों के प्रतिकूल हो गई तो सभी का जीवन लगभग नष्ट हो जाएगा। इसलिए इन प्राकृतिक शक्तियों की अनुकूलता की प्रार्थना कवियों के समान हमारे द्वारा भी की जानी चाहिए। वास्तव में संस्कृत के नाट्यजगत में भवभूति की पर्यावरणपरक दृष्टि अनुपम और विशाल है। उपर्युक्त विविध उदाहरणों के द्वारा यह स्पष्ट है कि इनका पर्यावरण के प्रति जो सुन्दर चिन्तन है वह **सर्वे भवन्तु सुखिनः** की मंगल कामना से ओत प्रोत है।

सन्दर्भ : –

1.उत्तररामचरितम् 2/20
2.महावीरचरितम् 5/42
3.मालतीमाधवम् 9/42
4.मालतीमाधवम् 9/15
5.उत्तररामचरितम् 2/16
6.उत्तररामचरितम् 1/25
7.उत्तररामचरितम् 2/29
8.महावीरचरितम् 7/12

ISBN: 978-93-85822-91-9